सूरतुल फ़ातिहा

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ

सूर: फ़ातिहा[1] मक्का में उतरी[2] इस में सात आयतें हैं।[3]

१. अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿1﴾

२. सब तारीफ़ें अल्लाह सारे जहान के रब के लिये हैं[4]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿2﴾

३. बड़ा मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿3﴾

४. बदले के दिन (क़यामत) का मालिक है

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿4﴾

५. हम तेरी ही इबादत[5] (उपासना) करते और तुझ ही से मदद माँगते हैं

اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ﴿5﴾

---

[1] सूर: फ़ातिहा क़ुरआन की पहली सूर: है, जिसकी हदीसों में बड़ी अहमियत है। فاتحة (फ़ातिहा) का मतलब शुरू है, इसलिए इसे الفاتحة अलफ़ातिहा यानी फ़ातिहतुल किताब कहा जाता है, इस के दूसरे भी बहुत से नाम हदीसों से साबित हैं।

[2] यह सूर: मक्की है, मक्की या मदनी का मतलब है जो सूरतें हिजरत (१३ नबूवत) से पहले नाज़िल हुई वह मक्की हैं चाहे उनका उतरना मक्का में हुआ या उन के आसपास। मदनी वह सूरतें हैं जो हिजरत के बाद नाज़िल हुई चाहे मदीना या उस के आसपास के इलाक़ों में नाज़िल हुई या उन से दूर, यहाँ तक कि मक्का और उस के आसपास ही क्यों न नाज़िल हुई हो।

[3] بسم الله के बारे में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि यह हर एक सूर: की आयत है या हर एक सूर: की आयत का हिस्सा है।

[4] رب (रब्ब), अल्लाह के अच्छे नामों में से एक नाम है, जिसका मतलब है हर चीज़ को पैदा करके उसकी ज़रूरतों को पूरी कराने वाला और उसे पूर्ति (तकमील) तक पहुँचाने वाला।

[5] इबादत का मतलब है किसी की ख़ुशी के लिये बहुत आजिज़ी, बेबसी और विनय का इज़हार, और इब्ने कसीर के क़ौल के ऐतबार से दीन में पूरी मुहब्बत, आजिज़ी और डर के मजमुआ का नाम है, यानी जिस के साथ प्रेम भी हो और उसकी ताक़त के आगे लाचारी और बेबसी का इज़हार भी हो, और ज़ाहिरी या बातिनी अस्बाब के ज़रिये उसकी पकड़ का डर भी हो। सीधा जुमला نعبدك ونستعينك है (हम तेरी इबादत करते हैं और तुझ से मदद माँगते हैं) लेकिन अल्लाह ने यहाँ दूसरे कारक (मफ़ऊल) को क्रिया (फ़ेल) से पहले करके ﴿اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ﴾ फ़रमाया: मक़सूद ख़ुसूसियत पैदा करना है, यानी हम तेरी ही इबादत करते और तुझ ही से मदद चाहते हैं, न इबादत अल्लाह के सिवा किसी और की जायेज़ है न मदद ही किसी से माँगनी जायेज़ (मान्य) है। इन लफ़्ज़ों (शब्दों) से शिर्क का दरवाज़ा बन्द कर दिया गया है।

६. हमें सीधा (सत्य) रास्ता[1] दिखा[2]

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝6

७. उन लोगो का रास्ता जिन पर तूने इआम किया उन का नहीं जिन पर तेरा गजब[3] हुआ और न गुमराहों का।[4]

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝7

---

[1] هداية (हिदायत) के कई मतलब हैं। रास्ता दिखाना, रास्ता पर चला देना, मंजिल तक पहुंचा देना, इसे अरबी में इरशाद, तौफीक, इलहाम और दलालत से तावीर किया जाता है, यानी हमें सीधा रास्ता दिखा दे, इस पर चलनें की तौफीक दे इस पर मजबूत कर दे ताकि हमें तेरी ख़ुशी हासिल हो जाये, यह सीधा रास्ता केवल अक़्ल से हासिल नहीं हो सकता। यह सीधा रास्ता वही "इस्लाम" है जिसे नबी ﷺ नें दुनियां के सामनें पेश किया और अब जो क़ुरआन और सहीह हदीस में महफ़ूज़ (सुरक्षित) है।

[2] यह صراط مستقيم (सीधा रास्ता) की तफ़सीर (व्याख्या) है कि सीधा रास्ता वह है जिस पर वह लोग चले जिन पर तेरी नेमत (अनुकम्पा) हुई। यह منعم عليه गरोह है अम्बिया, शहीदों, सिद्दीकों, और (नेक लोगों) का।

[3] कुछ हदीसों से साबित है कि مغضوب عليهم (जिन पर अल्लाह का गजब (क्रोध) उतरा) से मुराद यहूदी हैं, और ضالين (गुमराह) से मुराद नसारा (इसाई) हैं।

[4] सूरः फातिहा के आखिर में आमीन آمين कहनें पर नबी ﷺ नें बड़ा जोर दिया है और उसकी प्रतिष्ठा (फ़ज़ीलत) को बयान किया है, इसलिए इमाम और मुक्तदी दोनों को آمين (आमीन) कहना चाहिए।

सूरतुल बक़रः-२

سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ

सूरः बक़रः[1] मदीने में नाज़िल हुई इस में दो सौ छयासी आयतें और चालीस रुकुअ़ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़. लाम. मीम.।[2]

الٓمّٓ ﴿1﴾

२. इस किताब (के अल्लाह की किताब होने) में कोई शक नही, परहेज़गारों को हिदायत (मार्गदर्शन) करने वाली हैं।

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿2﴾

३. जो लोग ग़ैब (परलोक) पर ईमान लाते हैं।[3] और नमाज़ को क़ायम करते है[4] और हमारे ज़रिये अता किये हुए (माल) में से ख़र्च करते हैं।

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿3﴾

४. और जो लोग ईमान लाते हैं उस पर जो आप की ओर उतारा गया और जो आप से पहले उतारा गया।[5] और वह आख़िरत पर भी यक़ीन रखते हैं।

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿4﴾

---

[1] इस सूरः में आगे चलकर गाय की घटना (वाक़ेआ) का बयान हुआ है, इसलिए इसे बकरः गाय की घटना वाली सूरः (अरबी में "बकरः" गाय को कहते हैं) कहा जाता है।

[2] इन्हे अरबी में हरफ़े-मुक्ता (अलग-अलग अक्षर) कहा जाता है, यानी अलग-अलग पढ़े जाने वाले अक्षर। इन के मतलब के बारे में कोई प्रमाणित कथन (क़ौल) नहीं है।

[3] ग़ैब का अर्थ (मायने) वे चीज़ें हैं जिनका हल दिमाग़ और अक़्ल के ज़रिये नहीं, जैसे अल्लाह तआला का होना, वहयी (प्रकाशनायें) इलाही, जन्नत, जहन्नम, मलायेका (फ़रिश्ते, ईशदूत), क़ब्र का अज़ाब, हश्र का होना आदि (वग़ैरह)। इस से मालूम हुआ कि अल्लाह और रसूल की बतायी हुई ख़बरों पर अक़्ल, आभास के सिवाय पर यक़ीन करना ईमान का हिस्सा है और इनका इंकार कुफ़्र व गुमराही है।

[4] नमाज़ क़ायम करने का मतलब है कि पाबन्दी से सुन्नते नबवी के अनुसार नमाज़ पढ़ना, नहीं तो नमाज़ तो मुनाफ़िक़ (जो ऊपर से मुसलमान अन्दर से कुछ और) भी पढ़ते थे।

[5] पिछली किताबों पर ईमान लाने का मतलब यह है कि जो किताबें नबियों पर नाज़िल हुईं, वे सभी सच्ची हैं, अगरचे अब उन के अनुसार अमल नहीं किया जा सकता, अब अमल केवल क़ुरआन और नबी ﷺ की हदीस के अनुसार ही किया जाएगा।

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿5﴾

५. यही लोग अपने रब की ओर से सच्चे रास्ते पर हैं और यही लोग कामयाबी (और नजात) हासिल करने वाले हैं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿6﴾

६. बेशक काफ़िरों को आप का डराना या न डराना समान है, यह लोग ईमान न लायेंगे।

خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ ۖ وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿7﴾

७. अल्लाह तआला ने उन के दिल और कानों पर ठप्पा लगा दिया है और उनकी आँखों पर पर्दा है, और उन के लिए बड़ा अज़ाब है।[1]

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُم بِمُؤْمِنِينَ ﴿8﴾

८. और लोगों में से कुछ कहते हैं, हम अल्लाह (परमेश्वर) पर और आख़िरी दिन पर ईमान लाये हैं, लेकिन हक़ीक़त में वे ईमान वाले नहीं हैं।[2]

يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿9﴾

९. वह अल्लाह को और ईमान लाने वालों को धोखा दे रहे हैं, लेकिन हक़ीक़त में वह ख़ुद अपने आप को धोखा दे रहे हैं, और उन को समझ नहीं है।

فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ﴿10﴾

१०. उन के दिलों में रोग है, अल्लाह ने उनके रोग को और बढ़ा दिया और उनके झूठ बोलने के कारण उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ﴿11﴾

११. और जब उन से कहा जाता है कि धरती पर बिगाड़ मत पैदा करो, तो जवाब देते हैं कि हम तो सिर्फ़ सुधारक हैं।

أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَٰكِن لَّا يَشْعُرُونَ ﴿12﴾

१२. सावधान! हक़ीक़त में यही लोग बिगाड़ पैदा करने वाले हैं,[3] लेकिन समझ (ज्ञान) नहीं रखते।

---

[1] यह उन के ईमान न लाने का सबब बताया गया है कि चूँकि कुफ़्र और गुनाह के लगातार करने के कारण उन के दिलों से सच्चाई को क़ुबूल करनें की ताक़त ख़त्म हो चुकी है तो वह ईमान किस तरह ला सकते हैं?

[2] यहाँ से तीसरे गुट मुनाफ़िक़ों का बयान होता है, जिन के दिल ईमान से ख़ाली थे लेकिन ईमानवालों को धोखा देने के लिए मुँह से ईमान का दिखावा करते थे।

[3] बिगाड़, सुधार का उल्टा है। कुफ़्र और गुनाह से धरती पर बिगाड़ फैलता है और अल्लाह के हुक्म के पालन से शांति (सुकून) मिलती है।

१३. और जब उन से कहा जाता है कि दूसरे लोगों (यानी सहाबा) की तरह तुम भी ईमान लाओ, तो जवाब देते हैं कि क्या हम ऐसा ईमान लायें जैसा मूर्ख (बेवकूफ़) लाये हैं। सावधान! हक़ीक़त में यही मूर्ख हैं, लेकिन यह नहीं जानते।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَاۗءُ ۭ اَلَآ اِنَّھُمْ ھُمُ السُّفَهَاۗءُ وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ⑬

१४. और जब ईमानवालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम भी ईमानवाले हैं, और जब अकेले में अपने बड़ों (शैतान सिफ़त लोग) के पास जाते हैं तो कहते हैं कि हम तो तुम्हारे साथ हैं, हम तो केवल उनसे मज़ाक़ करते हैं।

وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ښ وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ ⑭

१५. अल्लाह तआला भी उन से मज़ाक़ करता है।[1] और उनको सरकशी और बहकावे में और बढ़ा देता है।

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّھُمْ فِىْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَھُوْنَ ⑮

१६. यह वे लोग हैं जिन्होंने गुमराही को हिदायत के बदले में ख़रीद लिया है। लेकिन इनका व्यापार[2] न फ़ायदेमंद हुआ, न वह हिदायत हासिल कर सके।

اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى ۠ فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُھُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ⑯

१७. इन लोगों की मिसाल उस इंसान जैसी है जिस ने आग जलाई लेकिन जब आग ने उसके आसपास को रौशन कर दिया, तो अल्लाह ने उनकी रौशनी छीन ली और उन्हें अन्धेरे में छोड़ दिया, जो नहीं देखते।

مَثَلُھُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا ۚ فَلَمَّآ اَضَاۗءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَھَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَھُمْ فِىْ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ⑰

१८. (ये) गूंगे, बहरे और अन्धे हैं, अब ये लौटने वाले नहीं हैं।

صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَھُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ⑱

[1] "अल्लाह तआला भी उन से मज़ाक़ करता है।" इसका एक मतलब तो यह है कि जिस तरह वे मुसलमानों के साथ मज़ाक़ और बेइज़्ज़ती का मामला करते हैं, अल्लाह तआला भी उनसे ऐसा ही मामला करते हुए उन्हें बेइज़्ज़त करता है। इसको मज़ाक़ से संबोधित (मुख़ातिब) करना भाषा का नियम है, वरन् यह हक़ीक़त में मज़ाक़ नहीं है, उनके मज़ाक़ करने की सज़ा है।

[2] इस आयत में तिजारत का मतलब सच्चे रास्ते को छोड़कर गुमराही में पड़ जाना है जो सीधा-सीधा नुक़सान का सौदा है।

أَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيهِ ظُلُمَٰتٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُونَ أَصَٰبِعَهُمْ فِىٓ ءَاذَانِهِم مِّنَ ٱلصَّوَٰعِقِ حَذَرَ ٱلْمَوْتِ ۚ وَٱللَّهُ مُحِيطٌۢ بِٱلْكَٰفِرِينَ ﴿19﴾

१९. या आकाश की वर्षा की तरह, जिस में अंधकार, गरज और बिजली हो। बिजली की गरज के कारण मौत से डरकर वे कानों में उंगलियाँ डाल लेते हैं, और अल्लाह तआला काफ़िरों को घेरने वाला है।

يَكَادُ ٱلْبَرْقُ يَخْطَفُ أَبْصَٰرَهُمْ ۖ كُلَّمَآ أَضَآءَ لَهُم مَّشَوْا۟ فِيهِ وَإِذَآ أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا۟ ۚ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَٰرِهِمْ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿20﴾

२०. लगता है कि बिजली उनकी आँखें झपट लेगी, जब उन के लिए उजाला करती है तो चलते हैं और जब अंधेरा करती है तो खड़े हो जाते हैं और अगर अल्लाह चाहे तो उनके कानों और आँखों को छीन ले, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعْبُدُوا۟ رَبَّكُمُ ٱلَّذِى خَلَقَكُمْ وَٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿21﴾

२१. हे लोगो! अपने उस पालनहार की इबादत करो जिस ने तुम को और तुम से पहले के लोगों को पैदा किया ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ।

ٱلَّذِى جَعَلَ لَكُمُ ٱلْأَرْضَ فِرَٰشًا وَٱلسَّمَآءَ بِنَآءً وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَخْرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ فَلَا تَجْعَلُوا۟ لِلَّهِ أَندَادًا وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿22﴾

२२. जिस ने तुम्हारे लिए धरती को बिछावन और आकाश को छत बनाया, और आकाश से वर्षा की और उस से फल पैदा करके तुम्हें जीविका (रिज़्क़) अता की, अत: यह जानते हुए किसी को अल्लाह का शरीक न बनाओ।

وَإِن كُنتُمْ فِى رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا۟ بِسُورَةٍ مِّن مِّثْلِهِۦ وَٱدْعُوا۟ شُهَدَآءَكُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿23﴾

२३. और अगर तुम्हें उस में शक हो जिसे हम ने अपने बन्दे पर नाज़िल किया है, और तुम सच्चे हो तो इसी जैसी एक सूर: बना लाओ, तुम्हें छूट है कि अल्लाह के सिवाय अपने सहयोगियों को भी बुला लो।[1]

[1] तौहीद (अल्लाह को एक मानना और उसकी इबादत करना) के बाद अब रिसालत (ईशदूत) के बारे में बताया जा रहा है, हम ने अपने बन्दे पर जो किताब उतारी उसका अल्लाह की ओर से नाज़िल होने में तुम्हें अगर शक है तो तुम अपने सभी मदद करने वालों को मिला कर इस जैसी एक सूर: ही बनाकर दिखाओ और अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते तो तुम्हें समझ लेना चाहिए कि हक़ीक़त में यह कलाम किसी इंसान की इजाद नहीं है बल्कि अल्लाह का ही कलाम है और हम पर और मोहम्मद ﷺ की रिसालत पर ईमान लाकर जहन्नम की आग से बचने की कोशिश करो, जहन्नम की आग जो काफ़िरों के लिए ही तैयार की गई है।

فَاِنۡ لَّمۡ تَفۡعَلُوۡا وَلَنۡ تَفۡعَلُوۡا فَاتَّقُوا النَّارَ
الَّتِىۡ وَقُوۡدُهَا النَّاسُ وَالۡحِجَارَةُ ۖۚ
اُعِدَّتۡ لِلۡكٰفِرِيۡنَ ﴿24﴾

२४. फिर अगर तुम ने नहीं किया और तुम कभी भी नहीं कर सकते,[1] तो (उसे सच्चा समझ कर) उस आग से डरो, जिसका ईंधन इंसान और पत्थर हैं, जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है।

وَبَشِّرِ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمۡ
جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوۡا
مِنۡهَا مِنۡ ثَمَرَةٍ رِّزۡقًا ۙ قَالُوۡا هٰذَا الَّذِىۡ
رُزِقۡنَا مِنۡ قَبۡلُ ۙ وَاُتُوۡا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمۡ
فِيۡهَاۤ اَزۡوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمۡ فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿25﴾

२५. और ईमानवालों और नेक काम करने वालों को,[2] उन स्वर्गों की ख़ुशख़बरी दो जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जब उन्हें उन से फल खाने के लिए दिए जाएंगे तो कहेंगे कि इस से पहले हमें खाने को यही दिया गया, वह समारुपी फल होंगे और उन के लिए उस में पक़ीज़ा बीवियाँ होंगी और वे उस में हमेशा रहेंगे।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسۡتَحۡىٖۤ اَنۡ يَّضۡرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوۡضَةً
فَمَا فَوۡقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا فَيَعۡلَمُوۡنَ اَنَّهُ
الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّهِمۡ ۚ وَاَمَّا الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا
فَيَقُوۡلُوۡنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ
يُضِلُّ بِهٖ كَثِيۡرًا ۙ وَّيَهۡدِىۡ بِهٖ كَثِيۡرًا ؕ وَمَا يُضِلُّ
بِهٖۤ اِلَّا الۡفٰسِقِيۡنَ ۙ﴿26﴾

२६. हक़ीक़त में अल्लाह तआला किसी मिसाल को बयान करने से लज्जित नहीं होता, चाहे वह मच्छर की हो या उससे भी तुच्छ चीज़ की, ईमानवाले उसे अपने रब की ओर से सच समझते हैं और काफ़िर कहते हैं कि ऐसी मिसाल देने से अल्लाह का मतलब क्या है? इसी के द्वारा बहुतों को गुमराह करता है और बहुत लोगों को सच्चे रास्ते पर लाता है। और गुमराह वह केवल अवज्ञाकारियों (फ़ासिकों) को ही करता है।

---

[1] यह क़ुरआन करीम की सच्चाई को एक वाज़ेह सुबूत है कि अरब व दूसरे इलाक़े के सभी काफ़िरों को ललकारा गया, लेकिन वह आज तक इसका जवाब नही दे सके और बेशक क़यामत आने तक ऐसा नहीं कर सकेंगे।

[2] क़ुरआन पाक में हर जगह ईमान के साथ नेक काम का बयान करके इस बात को वाज़ेह कर दिया गया है कि ईमान और नेक काम का चोली-दामन का साथ है। नेक काम के बिना ईमान का कोई फ़ायदा नहीं और ईमान के बिना नेक काम की अल्लाह के पास कोई क़ीमत नही और नेक काम क्या है? जो सुन्नत के अनुसार हो और सही तरीक़े से अल्लाह की ख़ुशी के लिए किया जाये। सुन्नत के ख़िलाफ़ अमल भी क़ुबूल नहीं है और दिखावे और रियाकारी के लिए किये गये काम भी बेकार और बेफ़ायदा हैं।

२७. जो लोग अल्लाह तआला के साथ की गयी मजबूत अहद (प्रतिज्ञा) को तोड़ देते हैं, और अल्लाह तआला ने जिन चीजों को जोड़ने का हुक्म दिया है, उसे काटते हैं और धरती पर फ़साद फैलाते हैं, यही लोग नुकसान उठाने वाले हैं।

الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ (27)

२८. तुम अल्लाह को कैसे नहीं मानते, जबकि तुम बेजान थे तो उस ने तुम्हें जीवन दिया,फिर तुम्हें मौत देगा, फिर दोबारा जिन्दा करेगा, फिर तुम को उसी के पास जाना है।

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ (28)

२९. उसी ने तुम्हारे लिए, जो कुछ धरती में है सब पैदा किया, फिर आकाश का इरादा किया[1] और उस ने सात बराबर आसमान बना दिये और वह हर चीज का जानने वाला है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ (29)

३०. और जब तुम्हारे रब ने फरिश्तों से कहा[2] कि, मैं धरती में एक ख़लीफा[3] (ऐसा गिरोह जो एक-दूसरे के बाद आयेगा) बनाने जा रहा हूँ, तो उन्होंने कहा क्या तू उस में ऐसे लोगों को पैदा करेगा जो उसमें फ़साद और ख़ून-ख़राबा करे, और हम तेरी तारीफ़ के साथ तेरी तस्बीह करते और तेरी पाकीजगी बयान करते हैं, उस ने कहा जो मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً قَالُوا أَتَجْعَلُ فِيهَا مَنْ يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ (30)

---

[1] इस्लाम धर्म (दीन) के कुछ आलिमों ने इसका अनुवाद (तर्जुमा) :

﴿ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ﴾

"फिर आसमान की ओर चढ़ गया" किया है। (सहीह बुखारी)

अल्लाह तआला का आसमानों के ऊपर अर्श पर चढ़ना और ख़ास-ख़ास मौकों पर दुनियां के करीब आसमान पर उतरना अल्लाह की सिफ़ात में से है। जिस पर इसी तरह ईमान रखना जरूरी है, जिस तरह से कुरआन और हदीस में बयान किया गया है।

[2] मलायेका (फ़रिश्ते) अल्लाह के प्रकाश से पैदा की गई मख़लूक है जिनका ठिकाना आसमान पर है, जो अपने रब के हुक्म का पालन करते हैं और उसकी तारीफ़ और पाकीजगी के बयान में व्यस्त (मशग़ूल) रहते हैं और उसके किसी हुक्म की नाफ़रमानी नही करते।

[3] ख़लीफ़ा का मतलब ऐसा प्राणी (मख़लूक) है जो एक-दूसरे के बाद आयेगा। (इब्ने कसीर)

३१. और उस (अल्लाह तआला) ने आदम को सभी नाम सिखा कर उन चीज़ों को फ़रिश्तों के सामने पेश कर दिया और फ़रमाया कि अगर तुम सच्चे हो तो इन चीज़ों के नाम बताओ।

وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ ۙ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِىْ بِاَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿31﴾

३२. उन सभी ने कहा, हे अल्लाह! तू पाक ज़ात है, हमें तो बस उतना ही इल्म है, जितना तूने हमें सिखाया है, पूरे इल्म और हिक्मत वाला तू ही है।

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿32﴾

३३. अल्लाह तआला ने आदम (ﷺ) से फ़रमाया, "तुम इन के नाम बता दो।" जब उन्होंने बता दिये, तो फ़रमाया क्या मैंने तुम्हें पहले नहीं कहा था कि मैं आसमानों और ज़मीन के ग़ैब को जानता हूं और जो तुम करते एवं छुपाते हो जानता हूं।

قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّىْٓ اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿33﴾

३४. और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो, तो इब्लीस के सिवाय सभी ने सज्दा किया। उस ने नकारा और घमंड किया[1] और वह था ही काफ़िरों में।[2]

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ ۫ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿34﴾

३५. और हम ने कह दिया, हे आदम! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो, और जहां से चाहो जी भरकर खाओ-पियो, लेकिन इस पेड़[3] के पास न जाना, वर्ना ज़ालिम हो जाओगे।

وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۪ وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿35﴾

[1] इब्लीस ने सज्दा से इन्कार किया और ज़लील हुआ। क़ुरआन के अनुसार इब्लीस जिन्नातों में से था, लेकिन अल्लाह तआला ने उसे सम्मानस्वरुप (बाइज़्ज़त) फ़रिश्तों में शामिल कर लिया था, इसलिए अल्लाह के हुक्म से उसको भी सज्दा करना ज़रूरी था, लेकिन उस ने हसद और घमंड की वजह से सज्दा करने से इंकार कर दिया, यानी हसद और घमंड वह पाप है जिनको इंसानियत की दुनियां में सब से पहले किया गया और इसका करने वाला इब्लीस था।

[2] अर्थात (यानी) अल्लाह तआला के पहले से इल्म में था।

[3] यह पेड़ किस चीज़ का था? इसके बारे में क़ुरआन और हदीस में वाज़ेह तौर से कुछ नहीं मिलता, इस को गेहूं का पौधा मशहूर कर दिया गया है, जो अवास्तविक है, हमें उस के नाम को मालूम करने की ज़रूरत नही है और न उसका कोई फ़ायेदा है।

فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۪ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿36﴾

३६. लेकिन शैतान ने उन्हें भटका कर वहाँ से निकलवा ही दिया, और हम ने कह दिया कि "उतरो, तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो, और एक मुक़र्रर वक़्त तक तुम्हें धरती पर ठहरना और फ़ायेदा उठाना है।"

فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿37﴾

३७. आदम (ﷺ) ने अपने पालनहार से कुछ बातें सीख ली (और अल्लाह से तौबा की) उस ने उनकी तौबा क़ुबूल कर ली, बेशक वही तौबा क़ुबूल करने वाला रहम करने वाला है।

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَاىَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿38﴾

३८. हम ने कहा तुम सभी यहाँ से उतरो, फिर अगर तुम्हारे पास मेरी ओर से हिदायत आये तो जो मेरे सही रास्ते को अपनायेगा उन पर कोई डर नहीं होगा न वे उदासीन होंगे।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿39﴾

३९. और जो कुफ़्र व झूठ के जरिये हमारी आयतों को झुठलायें, वे जहन्नम में रहने वाले हैं, और हमेशा उसी में रहेंगे।

يٰبَنِىْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِىْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّاىَ فَارْهَبُوْنِ ﴿40﴾

४०. हे इस्राईल के बेटो ! मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुम पर की, और मुझ से किया वादा पूरा करो, मैं तुम से किया वादा पूरा करूँगा, और सिर्फ़ मुझ से ही डरो।

وَاٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍۢ بِهٖ ۠ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِىْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۡ وَّاِيَّاىَ فَاتَّقُوْنِ ﴿41﴾

४१. और उस (शरीअत) पर ईमान लाओ जिसे मैंने उस को साबित करने के लिए उतारा जो (तौरात) तुम्हारे साथ है और तुम इस के पहले इंकारी न बनो, और मेरी आयतों को थोड़े मूल्य पर न बेचो,[1] और सिर्फ़ मुझ से डरो।

---

[1] **"थोड़े मूल्य (क़ीमत) पर मत बेचो"**। इसका मतलब यह कभी नही कि ज़्यादा क़ीमत मिल जाये तो अल्लाह के हुक्म का सौदा कर लो, बल्कि इसका मतलब यह है कि अल्लाह के हुक्म के मुक़ाबले में दुनिया के फ़ायदे को अहमियत न दो। अल्लाह के हुक्म तो इतने क़ीमती हैं कि सारी दुनिया का सामान और चीज़ें उन के मुक़ाबले में हक़ीर हैं। आयत में अगरचे इस्राईल के बेटों की तरफ़ इशारा किया गया है लेकिन यह हुक्म क़यामत तक सभी इंसानों के लिए है, जो कोई भी सच को छोड़ झूठ का पक्ष करे या जिहालत (अज्ञानता) को जाहिर कर सच से सिर्फ़ दुनियावी फल पाने के लिए मुँह मोड़ेगा, वह इस हुक्म में शामिल है। (फ़तहुल क़दीर)

४२. और सत्य (हक़) का असत्य (बातिल) के साथ मिलावट मत करो और न सच को छुपाओ, तुम्हें तो ख़ुद इसका इल्म है।

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿42﴾

४३. और नमाज क़ायम करो, और ज़कात दो, और रुकुउ करने (झुकने) वालों के साथ रुकुउ करो (झुक जाओ)।

وَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرّٰكِعِينَ ﴿43﴾

४४. क्या लोगों को नेकी का हुक्म देते हो? और ख़ुद अपने आप को भूल जाते हो, जबकि तुम किताब पढ़ते हो, क्या इतनी भी तुम में अक़्ल नहीं?

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتٰبَ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿44﴾

४५. और सब्र व नमाज के जरिये मदद हासिल करो।[1] और यह बड़ी चीज है, लेकिन अल्लाह से डरने वालों के लिए नहीं।

وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۚ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخٰشِعِينَ ﴿45﴾

४६. जो जानते हैं कि अपने रब से मिलना है और उसकी ओर पलट कर जाने वाले हैं।

الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلٰقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رٰجِعُونَ ﴿46﴾

४७. हे (याकूब) इस्राईल की सन्तानों! मेरी उस नेमत को याद करो, जो मैंने तुम पर उपकार किया और मैंने तुम्हें सारी दुनिया पर फ़ज़ीलत दी।

يٰبَنِيٓ إِسْرٰٓءِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِيٓ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِينَ ﴿47﴾

४८. और उस दिन से डरो जिस दिन कोई किसी के काम नहीं आएगा, न उसकी कोई सिफारिश क़ुबूल की जाएगी, न उस से कोई बदला क़ुबूल किया जाएगा और न उन्हें मदद दी जाएगी।

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَّا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ﴿48﴾

४९. और जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन के आदमियों[2] से छुटकारा दिलाया, जो तुम्हें बुरा अज़ाब देते रहे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल करते रहे, और तुम्हारी बेटियां जिन्दा छोड़ते रहे, इस

وَإِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُونَ أَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِي ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿49﴾

[1] सब्र और नमाज दोनों अल्लाह वालों के दो बड़े हथियार हैं। नमाज के जरिये एक मोमिन को अल्लाह से सम्बन्ध आसानी से होता है, जिससे उसे अल्लाह की मर्जी और मदद हासिल होती है, सब्र के जरिये उसके चरित्र (किरदार) में मजबूती और धर्म में इस्तिक़ामत पैदा होती है।

[2] आले फ़िरऔन से मुराद केवल फ़िरऔन और उसका परिवार ही नहीं, बल्कि फ़िरऔन के सभी साथी हैं।

से छुटकारा दिलाने में तुम्हारे रब का बड़ा उपकार था।

५०. और जब हम ने तुम्हारे लिए सागर को फाड़ दिया[1] और उस से तुम्हें पार कर दिया और फ़िरऔन के साथियों को तुम्हारी आँखों के सामने डुबो दिया।

وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَ اَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿50﴾

५१. और हम ने मूसा (عليه السلام) को चालीस रातों का वचन दिया, फिर तुम ने बछड़े को माबूद बना लिया, और ज़ालिम बन गए।

وَاِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰىٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿51﴾

५२. लेकिन हम ने इस के बावजूद भी तुम्हें माफ़ कर दिया, ताकि तुम शुक्रगुज़ार रहो।

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿52﴾

५३. और हम ने मूसा (عليه السلام) को तुम्हारी हिदायत के लिए किताब (तौरात) और मोजिज़ा अता किये।

وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ الْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿53﴾

५४.और जब मूसा (عليه السلام) ने अपनी क़ौम वालों से कहा कि "हे मेरी क़ौम वालों! तुम ने बछड़े को (देवता) बनाकर ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया है, अब तुम अपने पैदा करने वाले की तरफ़ तवज्जोह करो, अपने आप को (अपराधी को) अपने हाथों क़त्ल करो, तुम्हारे लिए भलाई अल्लाह तआला के पास इसी में है" तो उस ने तुम्हारी तौबा (क्षमा-याचना) क़ुबूल की। बेशक वही तौबा क़ुबूल करने वाला और रहम करने वाला है।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِىِٕكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِىِٕكُمْ ۭ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۭ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿54﴾

५५. और (तुम उसे भी याद करो) जब तुम ने मूसा (عليه السلام) से कहा था कि - जब तक हम अल्लाह को सामने न देख लेंगे कभी भी ईमान न लाएंगे (जिस नाफ़रमानी के दण्डस्वरुप) तुम पर तुम्हारे देखते हुए बिजली गिर पड़ी।

وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿55﴾

[1] सागर का फाड़ना और उस में रास्ता बना देना, यह एक मोजिज़ा था, जिसका पूरा बयान सूरः "शोआरा" में किया गया है। यह समुद्र का ज्वार-भाटा नहीं था, जैसाकि सर सैय्यद अहमद ख़ाँ और दूसरे मोजिज़ा का इंकार करने वालों का विचार है।

ثُمَّ بَعَثْنَٰكُم مِّنۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿56﴾

५६. (लेकिन) फिर हम ने तुम्हें मौत के बाद ज़िंदगी इसलिए दिया ताकि तुम शुक्रिया अदा करो।

وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ ٱلْغَمَامَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْكُمُ ٱلْمَنَّ وَٱلسَّلْوَىٰ ۖ كُلُوا۟ مِن طَيِّبَٰتِ مَا رَزَقْنَٰكُمْ ۖ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِن كَانُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿57﴾

५७. और हमने तुम्हारे ऊपर बादलों की छाया की और तुम पर मन्न व सलवा उतारा[1] (और कह दिया) हमारी अता की हुई पाक चीज़ें खाओ, और उन्होंने हम पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि ख़ुद अपने आप पर ज़ुल्म करते थे।

وَإِذْ قُلْنَا ٱدْخُلُوا۟ هَٰذِهِ ٱلْقَرْيَةَ فَكُلُوا۟ مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَٱدْخُلُوا۟ ٱلْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا۟ حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطَٰيَٰكُمْ ۚ وَسَنَزِيدُ ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿58﴾

५८. और हम ने तुम से कहा कि इस बस्ती में जाओ।[2] और जो कुछ जहाँ कहीं से भी चाहो जी भर कर खाओ-पियो और दरवाज़े में से सिर झुकाए हुए दाख़िल हो[3] और मुँह से कहो कि "हम माफ़ी चाहते हैं।"[4] हम तुम्हारी ग़लतियों को माफ़ कर देंगे और भलाई करने वालों को और ज़्यादा अता करेंगे।

فَبَدَّلَ ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ قَوْلًا غَيْرَ ٱلَّذِى قِيلَ لَهُمْ فَأَنزَلْنَا عَلَى ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ رِجْزًا مِّنَ ٱلسَّمَآءِ بِمَا كَانُوا۟ يَفْسُقُونَ ﴿59﴾

५९. फिर उन ज़ालिमों ने यह बात जो उन से कही गई, बदल डाली, हम ने भी उन ज़ालिमों पर उनकी नाफ़रमानी की वजह से आकाश से अज़ाब उतारा।[5]

---

[1] (मन्न) कुछ के पास तुरंजबीन है, या ओस, जो पेड़ या पत्थर पर गिरती तो शहद के तरह मीठी हो जाती और सूख कर गोंद की तरह हो जाती। कुछ के नज़दीक शहद की तरह मीठा पानी है। हदीस है कि :

«الكمأة نوع من المنّ»

"कुम्भी मन्न की तरह है।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

सलवा बटेर या एक तरह की चिड़िया थी जो ज़िब्ह (वध) करके खा लेते थे। (फ़तहुल क़दीर)

[2] उस बस्ती से मुराद ज़्यादातर मुफ़स्सिरों के नज़दीक बैतुल मुक़द्दस है।

[3] सज्दा से मुराद कुछ लोगों ने झुकते हुए दाख़िल होने से लिया है और कुछ ने शुक्रिया को सज्दा ही माना है। मुराद यह है कि अल्लाह के सामने शुक्रिया अदा करते हुए आजिज़ी ज़ाहिर करते हुए दाख़िल हो।

[4] حطة का मतलब है "हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे।"

[5] ये आकाश से अज़ाब क्या था? कुछ के नज़दीक अल्लाह का गुस्सा, अधिक धुन्ध और प्लेग था, इस आख़िरी मतलब का पक्ष हदीस से हासिल होता है।

وَإِذِ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا اضْرِب بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۖ كُلُوا وَاشْرَبُوا مِن رِّزْقِ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٦٠﴾

६०. और जब मूसा (ﷺ) ने अपनी जाति के लिए पानी माँगा तो हम ने कहा कि अपनी लाठी पत्थर पर मारो, जिसे बारह चश्मे फूट पड़े, हर गिरोह ने अपना चश्मा पहचान लिया (और हम ने कह दिया कि) अल्लाह तआ़ला का अता किया हुआ अनाज खाओ-पियो और धरती पर फ़साद फैलाते न फिरो।

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَىٰ لَن نَّصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنبِتُ الْأَرْضُ مِن بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ۖ قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ ۚ اهْبِطُوا مِصْرًا فَإِنَّ لَكُم مَّا سَأَلْتُمْ ۗ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٦١﴾

६१. और जब तुम ने कहा कि "हे मूसा (ﷺ)!" हम से एक ही तरह का खाना खाने पर सब्र नहीं हो सकेगा, इसलिए अपने रब से दुआ कीजिए कि वह हमें धरती पर पैदा साग, ककड़ी, गेहूँ, मसूर, और प्याज दे। आप ने कहा कि उम्दा चीज़ के बदले हक़ीर चीज़ क्यों माँगते हो? अच्छा शहर में जाओ और वहाँ पर तुम्हें तुम्हारी पसंद की यह सभी चीज़ें मिलेंगी![1] उन पर ज़िल्लत और ग़रीबी डाल दी गई और वे अल्लाह का अज़ाब लेकर लौटे, यह इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों को नहीं मानते थे और नबियों का नाहक क़त्ल करते थे, यह उनकी ज़्यादतियों का नतीजा है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَىٰ وَالصَّابِئِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

६२. बेशक जो मुसलमान हों, यहूदी हो, नसारा (इसाई) हो या साबी हो,[2] जो कोई भी अल्लाह तआ़ला और क़यामत के दिन पर ईमान लाएगा और अच्छे काम करेगा उस का बदला उस के रब के पास है, और उन को न कोई डर है और न कोई ग़म होगा।

[1] यह हादसा भी उसी तीह के मैदान का है। मिस्र से मतलब इजिप्ट देश नहीं बल्कि कोई शहर है। मतलब यह है कि यहाँ से किसी भी शहर में चले जाओ और वहाँ खेती करो। अपनी पसन्द की तरकारियाँ व दालें उगाओ और खाओ। उनकी यह माँग चूँकि इन्आम का अनादर था इसलिए फटकार के रुप में कहा गया कि "तुम्हारे लिए वहाँ तुम्हारी मन पसन्द चीज़ें हैं।"

[2] صابئ ـ صابئين का बहुवचन (जमा) है। यह वे लोग हैं जो ज़रूर शुरूआती दौर में किसी सच्चे धर्म (दीन) के मानने वाले रहे होंगे (इसलिए क़ुरआन में यहूदी, इसाई धर्म के साथ बयान किया गया है) लेकिन बाद में उन के अन्दर फ़रिश्तों की पूजा का रिवाज हो गया या यह किसी भी धर्म के मानने वाले न रहे, इसी वजह से बेदीनों को साबी कहा जाने लगा।

६३. और जब हम ने तुम से वचन लिया और तुम्हारे ऊपर तूर पहाड़ ला खड़ा कर दिया।[1] और कहा-जो हम ने तुम्हें दिया है, उसे मज़बूती से पकड़े रहो और जो कुछ उस में है उसे याद करो, ताकि तुम बच सको।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿63﴾

६४. फिर तुम उस के बाद भी फिर गए, फिर अगर अल्लाह तआला का फ़ज़्ल और रहमत तुम पर न होती, तो तुम नुक़सान उठाने वाले होते।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿64﴾

६५. और अवश्य ही तुम्हें उन लोगों के बारे में इल्म भी है, जो तुम में से शनिवार[2] के बारे में हद से तजावुज़ कर गए और हम ने (भी) कह दिया कि तुम ज़लील बन्दर बन जाओ।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿65﴾

६६. इसे हमने अगले-पिछलों के लिए होशियार रहने की वजह बना दिया, और डरने वालों के लिए नसीहत है।

فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِلْمُتَّقِينَ ﴿66﴾

६७. और मूसा (عليه السلام) ने जब अपनी जाति से कहा कि - अल्लाह तआला तुम्हें एक गाय[3] ज़िब्ह करने का हुक्म देता है, तो उन्होंने कहा कि "हम से क्यों मज़ाक़ करते हो?" आप ने जवाब दिया कि "मैं ऐसी बेवक़ूफ़ी से अल्लाह तआला की पनाह लेता हूँ।"

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿67﴾

---

[1] जब तौरात के हुक्मों के लिए यहूदियों ने दुश्मनी के तौर पर कहा कि - हम से तो इन हुक्मों का पालन नहीं हो सकेगा तो अल्लाह तआला ने तूर पहाड़ को छत की तरह उन के ऊपर उठा दिया, जिससे डर कर उन्होंने पालन करने का वचन दिया।

[2] السبت (शनिवार) के दिन यहूदियों को मछली का शिकार, बल्कि कोई भी काम करने से रोका गया था, लेकिन उन्होंने एक बहाना निकाल कर अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी की। शनिवार के दिन (इम्तेहान के लिए) मछलियां ज़्यादा आतीं, उन्होंने गडढे खोद लिए ताकि मछलियां उस में फंसी रहें और फिर रविवार के दिन उन को पकड़ लेते।

[3] इस्राईल की औलाद में बिना किसी औलाद के एक आदमी था, उस का एक ही वारिस उस का भतीजा था, एक रात उस भतीजे ने अपने चाचा का क़त्ल करके लाश किसी दूसरे आदमी के दरवाज़े पर डाल दी, असली क़ातिल की खोज में वे एक-दूसरे को कहने लगे, आख़िर में बात मूसा (عليه السلام) तक पहुँची, तो उन्हें एक गाय ज़िब्ह करने का हुक्म हुआ, गाय के गोश्त का एक टुकड़ा लाश पर मारा गया, जिससे वह ज़िन्दा हो गया और क़ातिल को पहचान कराते ही मर गया। (फ़तहुल क़दीर)

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌ بَيْنَ ذَٰلِكَ ۖ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ﴿68﴾

६८. उन्होंने कहा-हे मूसा! (عليه السلام), अल्लाह से दुआ कीजिए की हमें उस के बारे में बता दे। आप ने फ़रमाया, सुनो! वह गाय न तो बूढ़ी हो और न बछिया, बल्कि दरमियानी उम्र की हो, अब तुम्हें जो हुक्म दिया गया है उसका पालन करो।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا لَوْنُهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ﴿69﴾

६९. वे फिर कहने लगे कि अल्लाह से दुआ कीजिए कि वह हमें बता दे कि उसका रंग कैसा हो? फ़रमाया वह कहता है कि गाय सुनहरे तीखे रंग की हो, और देखने वालों को खुश कर देती हो।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ﴿70﴾

७०. वे कहने लगे कि अपने रब से दुआ कीजिए कि वह हमें खोल कर बता दे कि वह कैसी हो? इस तरह की बहुत सी गायें हैं पता नहीं चलता, अगर अल्लाह ने चाहा तो हमें हिदायत हासिल हो जाएगी।

قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيهَا ۚ قَالُوا الْآنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ۚ فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿71﴾

७१. उस ने कहा कि अल्लाह का हुक्म है कि वह गाय खेती वाली जमीन में हल जोतने वाली और खेतों को पानी पिलाने वाली नहीं, वह स्वस्थ और बेदाग है। उन्होंने कहा अब आप ने वाजेह कर दिया, फिर भी वह आदेशों का पालन करने वाले नहीं थे, लेकिन उसे माना और गाय की क़ुर्बानी दी।

وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَّارَأْتُمْ فِيهَا ۖ وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿72﴾

७२. और जब तुम ने एक जान को क़त्ल कर दिया, फिर एक-दूसरे पर इल्जाम लगाने लगे, और अल्लाह को तुम्हारी छुपाई बात जाहिर करनी थी।

فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ۚ كَذَٰلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿73﴾

७३. हम ने कहा कि उस गाय का एक टुकड़ा मुर्दा के जिस्म पर मारो (वह जिन्दा हो जाएगा) उसी तरह अल्लाह तआला मुर्दा को जिन्दा करके तुम्हारी अक़्लमंदी के लिए निशानियाँ दिखाता है।

७४. फिर उस के बाद तुम्हारे दिल पत्थर जैसे बल्कि उस से भी ज्यादा मजबूत हो गए, कुछ पत्थरों से तो नहरें बह निकलती हैं तथा कुछ फट जाते हैं और उन से पानी निकलता है, और कुछ अल्लाह तआला के डर से गिर पड़ते हैं, और तुम अल्लाह तआला को अपने अमल से अन्जान न जानो।

७५. (हे मुसलमानों!) क्या तुम चाहते हो कि वह (यहूदी) तुम्हारा यकीन कर लें - जबकि उन में ऐसे भी हैं जो अल्लाह का कलाम सुनते हैं फिर उसे समझने के बाद उसे फेर-बदल कर देते हैं, और ऐसा वे जानकर करते हैं।

७६.और जब ईमान वालों से मिलते हैं तो अपनी ईमानदारी जाहिर करते हैं, और जब आपस में मिलते हैं तो कहते हैं कि मुसलमानों तक क्यों वह बातें पहुँचाते हो जो अल्लाह ने तुम्हें सिखायी हैं, क्या जानते नहीं कि ये तो अल्लाह के सामने तुम पर उनका सुबूत हो जाएगा।

७७. क्या ये नहीं जानते कि अल्लाह तआला उनकी छुपी और जाहिर सभी बातें जानता है।

७८. और उन में से कुछ अनपढ़ ऐसे भी हैं जो उम्मीदों के सिवाय किताब नहीं जानते और सिर्फ अटकल करते हैं।

७९. उन लोगों के लिए हलाकत है, जो ख़ुद अपने हाथों लिखी किताब को अल्लाह की किताब कहते हैं, और इस तरह दुनिया (धन) कमाते हैं, अपने हाथों लिखने की वजह से उनकी बरबादी है और अपनी इस कमाई की वजह से उनका विनाश है।

८०. और ये लोग कहते हैं कि हम तो कुछ ही दिन जहन्नम में रहेंगे, (उन से) कहो कि क्या तुम ने अल्लाह तआला से कोई वादा लिया है[1]? अगर है तो बेशक अल्लाह तआला अपना

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ۚ وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ (74)

أَفَتَطْمَعُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلَامَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُ مِنْ بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ (75)

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا ۖ وَإِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ قَالُوا أَتُحَدِّثُونَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُمْ بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ (76)

أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ (77)

وَمِنْهُمْ أُمِّيُّونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ (78)

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَوَيْلٌ لَهُمْ مِمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَهُمْ مِمَّا يَكْسِبُونَ (79)

وَقَالُوا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَعْدُودَةً ۚ قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهُ ۖ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ (80)

[1] यहूदी कहते थे कि दुनिया का वजूद केवल सात हजार साल के लिए है और हम हजार साल के बदले एक दिन जहन्नम में रहेंगे, इस तरह सिर्फ सात दिन नरक में रहेंगे। कुछ कहते थे कि हम ने चालीस दिन बछड़े की इबादत की थी, चालीस दिन नरक में रहेंगे। अल्लाह तआला फरमाता है कि

वादा तोड़ेगा नहीं, या तुम अल्लाह के ऊपर वह बातें लगाते हो जिन्हें तुम नहीं जानते ।[1]

८१. बेशक जिसने भी गुनाह किया और उस के गुनाह ने उसे घेर लिया वह जहन्नमी है। वह हमेशा जहन्नम में रहेगा।

८२. और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल किये वे जन्नती हैं, जो हमेशा जन्नत में रहेंगे।

८३. और जब हम ने इसराईल के पुत्रों से वादा लिया कि-तुम अल्लाह के सिवाय किसी और की इबादत न करना और माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करना, और उसी तरह क़रीबी रिश्तेदारों, यतीमों और ग़रीबों के साथ, और लोगों को अच्छी बातें बताना, नमाज क़ायम करना और ज़कात देते रहना, लेकिन थोड़े से लोगों के सिवाय तुम सभी मुकर गये और मुँह मोड़ लिये।

८४. और जब हम ने तुम से वादा लिया कि आपस में ख़ून न बहाना (क़त्ल न करना) और अपनों को देश से न निकालना, तुम ने क़ुबूल किया और तुम उस के गवाह बने।

८५. फिर भी तुम ने अपनों का क़त्ल किया और अपने एक गुट को देश से निकाला और गुनाह और जलन करने के काम में उन के ख़िलाफ़ दूसरे का पक्ष लिया। हाँ जब वे बन्दी बनकर तुम्हारे पास आए तो तुम ने उन के बदले में माल दिया (जिसे फ़िदिया कहते हैं), लेकिन उनका निकालना जो तुम पर हराम था (उसकी कुछ फ़िक्र न की)। क्या तुम किताब की कुछ बातें मानते हो और कुछ को नकारते हो? तुम में से जो भी ऐसा करे उसकी सज़ा इस के सिवाय क्या हो कि दुनिया में ज़िल्लत और

بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـئَتُهٗ
فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿81﴾
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿82﴾
وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ
اِلَّا اللّٰهَ ۗ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى
وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ
مُّعْرِضُوْنَ ﴿83﴾
وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ
وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ
اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿84﴾
ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ
فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ ۫ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ
وَالْعُدْوَانِ ؕ وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ
مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ ؕ اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ
الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ
ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا خِزْيٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَيَوْمَ
الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ؕ وَمَا اللّٰهُ
بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿85﴾

[1] क्या तुम ने अल्लाह से समझौता किया है? अल्लाह तआला के साथ इस तरह का कोई वादा नहीं है। या तुम्हारा यह दावा कि अगर हम नरक में गये भी तो सिर्फ़ कुछ दिनों के लिए जाएंगे, तुम्हारे अपनी तरफ़ से है, और इस तरह तुम अल्लाह के ऊपर ऐसी बातें लगाते हो, जिनका तुम्हें ख़ुद इल्म नहीं है। आगे अल्लाह तआला अपना वह क़ानून बयान कर रहा है जिस के आधार पर क़यामत के दिन वह नेकी करने वाले और बुरों को उन की नेकी और बुरे काम की सज़ा देगा।

क़यामत के दिन कठिन सज़ाओं की मार! और अल्लाह तुम्हारे आमाल से अंजान नहीं है।

أولئك الذين اشتروا الحيوة الدنيا بالآخرة فلا يخفف عنهم العذاب ولا هم ينصرون ﴿86﴾

८६. ये वे लोग हैं जिन्होंने दुनिया की ज़िंदगी को आख़िरत के बदले ख़रीद लिया है, उनकी न सज़ायें क़म होंगी न उनकी मदद की जाएगी।

ولقد آتينا موسى الكتب وقفينا من بعده بالرسل وآتينا عيسى ابن مريم البينت وأيدنه بروح القدس أفكلما جاءكم رسول بما لا تهوى أنفسكم استكبرتم ففريقا كذبتم وفريقا تقتلون ﴿87﴾

८७. और हम ने मूसा (ﷺ) को किताब अता की और उन के बाद लगातार रसूल भी भेजे और हम ने ईसा (ﷺ) बिन मरियम को वाज़ेह निशानियाँ अता कीं और पाकीज़ा रूह (हज़रत जिब्रील) से उनकी ताईद करायी, लेकिन जब कभी भी तुम्हारे पास रसूल वह चीज़ लाए, जो तुम्हारे विचारों के ख़िलाफ़ थीं, तुम ने फ़ौरन तकब्बुर किया, फिर कुछ को तुम ने झुठला दिया और कुछ को क़त्ल कर दिया।

وقالوا قلوبنا غلف بل لعنهم الله بكفرهم فقليلا ما يؤمنون ﴿88﴾

८८. और उन्होंने कहा कि हमारे दिल ढंके हुए हैं, (नहीं, नहीं) बल्कि उन के कुफ़्र की वजह से उन्हें अल्लाह ने धित्कार दिया है, तो उन मे ईमान वाले सिर्फ़ थोड़े है।[1]

ولما جاءهم كتب من عند الله مصدق لما معهم وكانوا من قبل يستفتحون على الذين كفروا فلما جاءهم ما عرفوا كفروا به فلعنة الله على الكفرين ﴿89﴾

८९. और जब उन के पास उनकी किताब (तौरात) की पुष्टि (तसदीक़) करने के लिए एक किताब (पाक क़ुरआन) आ गई, अगरचे इस से पहले ये ख़ुद इस के द्वारा काफ़िरों पर जीत चाहते थे, तो आ जाने के बावजूद और पहचान लेने के बावजूद उन्हें नकार दिया, अल्लाह (तआला) की लानत हो काफ़िरों पर।

بئسما اشتروا به أنفسهم أن يكفروا بما أنزل الله بغيا أن ينزل الله من فضله على من يشاء من عباده فباءو بغضب على غضب وللكفرين عذاب مهين ﴿90﴾

९०. बहुत बुरी है वह चीज़ जिसके बदले उन्होंने अपने को बेच डाला, वह उनका कुफ़्र करना है अल्लाह तआला की तरफ़ से उतरी किताब को, सिर्फ़ इस बात से जल कर कि अल्लाह ने अपनी नेमत अपने जिस बन्दे पर चाहा उतारा, इस कारण वे क्रोध (ग़ज़ब) पर क्रोध के भागी हो गए[2] और उन काफ़िरों के लिये अपमानजनक

[1] दिलों पर सच्ची बातों का असर न पड़ना, कोई बड़प्पन की बात नहीं बल्कि यह निन्दनीय (ज़लील) होने की निशानी हैं, इसलिए उनका ईमान भी तनिक है (जो अल्लाह के यहाँ क़ुबूल नहीं है) या उन में ईमान लाने वाले भी थोड़े ही लोग होंगे।

[2] क्रोध (ग़ुस्सा) पर क्रोध का मतलब होता है, बहुत ज़्यादा क्रोध। क्योंकि बार-बार वे क्रोध का

(रूस्वा करने वाला) अजाब है।

९१. और जब उन से कहा गया कि उस पर ईमान लाओ जिसे अल्लाह ने उतारा है, तो उन्होंने कह दिया कि जो हम पर (तौरात) नाज़िल हुई उस पर हमारा ईमान है, और वह उस के सिवाय (पाक क़ुरआन) का इन्कार करते हैं, जब कि वह सच है, उन के पास (धर्मग्रन्थ) की तसदीक़ कर रहा है। (हे! रसूल) उन से कहो कि अगर तुम अपनी किताब पर यक़ीन रखते हो तो इस से पहले अल्लाह के रसूलों का क़त्ल क्यों किया।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا نُؤْمِنُ بِمَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِمَا مَعَهُمْ ۗ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنْبِيَاءَ اللَّهِ مِنْ قَبْلُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ (91)

९२. और तुम्हारे पास मूसा (ﷺ) यही निशानियाँ लेकर आए, लेकिन फिर भी तुम ने बछड़े की पूजा की, तुम हो ही जालिम।

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ (92)

९३. और जब हम ने तुम से वादा लिया और तुम पर तूर पहाड़ खड़ा कर दिया (और कह दिया) कि हमारी अता की हुई चीजों को मजबूती से पकड़ो और सुनो, तो उन्होंने कहा हम ने सुना और नाफ़रमानी की, और उन के दिलों में बछड़े का प्रेम (जैसा कि) पिला दिया गया,[1] उन के कुफ्र की वजह से। (उनसे) कह दीजिए कि तुम्हारा ईमान तुम्हे बुरा हुक्म दे रहा है, अगर तुम ईमान वाले हो।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاسْمَعُوا ۖ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأُشْرِبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ۚ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُمْ بِهِ إِيمَانُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ (93)

९४. (आप) कह दीजिए कि अगर अल्लाह के पास आख़िरत का घर तुम्हारे ही लिए है और किसी के लिए नहीं, तो आओ अपनी सच्चाई की पुष्टि (तसदीक़) के लिए मौत माँगो।

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ (94)

काम करते रहे, जैसा कि तफ़सील से गुजर चुका है और अब सिर्फ़ हसद की वजह से क़ुरआन और हजरत मोहम्मद ﷺ का इंकार किया।

[1] एक तो प्यार ख़ुद ही ऐसा जज़्बा है कि इंसान को अंधा और बहरा बना देता है। दूसरे इसको أشربوا (पिला दी गई) से तुलना (मुआजना) की गई है क्योंकि पानी इंसान के नस-नस और जिस्म की आंतों में दौड़ता है जबकि खाने का सामान इस तरह नही होता। (फ़तहुल क़दीर)

९५. लेकिन अपने अमल को देखते हुए वे कभी भी मौत नहीं मांगेंगे और अल्लाह (तआला) जालिमों को अच्छी तरह जानता है।

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿95﴾

९६. बल्कि सब से ज़्यादा दुनिया की ज़िन्दगी को प्यार करने वाला (ऐ नबी !) आप उन्हीं को पाएंगे, ये ज़िन्दगी की लालच में मुशरिकों (मूर्तिपूजकों) से भी ज़्यादा हैं। उन में से हर शख़्स एक-एक हज़ार साल की उम्र चाहता है, अगरचे ये उम्र दिया जाना भी उन्हें अज़ाबों से नही बचा सकता, अल्लाह (तआला) उन के अमल को अच्छी तरह देख रहा है।

وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿96﴾

९७. (ऐ नबी!) आप कह दीजिए कि जो जिब्रील के दुश्मन हों, जिस ने आप के दिल पर अल्लाह का पैग़ाम उतारा है, जो पैग़ाम उनके पास की किताब की तसदीक़ करने वाला और ईमान वालों को हिदायत और ख़ुशख़बरी देने वाला है। (तो अल्लाह भी उनका दुश्मन है)[1]

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿97﴾

९८. जो इंसान अल्लाह का और उसके फ़रिश्तो और उसके रसूलों व जिब्रील और मीकाईल का दुश्मन हो, ऐसे काफ़िरों (अधर्मियों) का दुश्मन ख़ुद अल्लाह है।

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿98﴾

९९. और बेशक हम ने आप की तरफ़ वाजेह निशानियाँ भेजी हैं, जिनको फ़ासिकों के सिवाय और कोई इन्कार नहीं करता।

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿99﴾

१००. ये लोग जब कभी भी वादा करते हैं तो उन का एक न एक गुट उसे तोड़ देता है। बल्कि उन में से ज़्यादातर ईमान से ख़ाली हैं।

اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿100﴾

---

[1] हदीसों में है कि यहूदियों के कुछ आलिम नबी ﷺ के पास आए और कहा कि अगर आप ﷺ ने उनका ठीक जवाब दे दिया तो हम ईमान ले आयेंगे, क्योंकि नबी के सिवा उनका जवाब कोई नहीं दे सकता। जब आप ﷺ ने उन के सवालों का जवाब ठीक-ठीक दे दिया तो उन्होंने कहा कि आप ﷺ पर प्रकाशना (वह्यी) कौन लाता है? आप ﷺ ने फ़रमाया "जिब्रील" यहूदी कहने लगे कि जिब्रील तो हमारा दुश्मन है, वही तो लड़ाई, क़त्ल और अज़ाब लेकर उतरता रहा है और इस बहाने से आप (ﷺ) को मानने से इंकार कर दिया। (इब्ने कसीर और फ़तहुल क़दीर)

وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿101﴾

१०१. और जब कभी उन के पास अल्लाह का कोई रसूल उनकी किताब की तसदीक़ (पुष्टि) करने आया, तो उन अहले किताब के एक गुट ने अल्लाह की किताब को इस तरह पीछे डाल दिया जैसे जानते नहीं थे।

وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۗ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ۭ وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ۭ فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ۭ وَمَا هُمْ بِضَاۗرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۭ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۜ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ ۭ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿102﴾

१०२. और उस के पीछे लग गये जिसे शैतान, (हज़रत) सुलेमान के मुल्क में पढ़ते थे। सुलेमान ने तो कुफ़्र न किया था बल्कि यह कुफ़्र शैतानों का था, वे लोगों को जादू सिखाते थे, और बाबिल में हारुत और मारुत दो फ़रिश्तों पर जो उतारा गया था, वह दोनों भी किसी शख़्स को उस वक़्त तक न सिखाते थे जब तक वे यह न कह दें कि हम तो एक इम्तेहान हैं, तू कुफ़्र न कर, फिर लोग उन से वह सीखते जिससे पति-पत्नी में फूट डाल दें। हक़ीक़त में वे बिना अल्लाह की मर्ज़ी के किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते।[1] ये लोग वह सीखते हैं जो इन्हें न नुक़सान पहुँचाए और न फ़ायेदा पहुँचा सके, और वह निश्चित रुप से जानते हैं कि इस के लेने वाले का आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है। और वह बहुत ही बुरी चीज़ है जिसके बदले वे अपने आप को बेच रहे हैं, अगर ये जानते होते।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ۭ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿103﴾

१०३. और अगर ये लोग ईमान लाते और अल्लाह से डर रखते तो अल्लाह (तआला) की ओर से भलाई मिलती, अगर ये जानते होते।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿104﴾

१०४. ऐ ईमानवालो! तुम (नबी ﷺ को) راعنا (हमारा ध्यान दीजिए या हमारा ख़्याल कीजिए) न कहा करो, बल्कि انظرنا (हमारी ओर देखिये)

---

[1] यह जादू भी उस समय तक किसी को नुक़सान नहीं पहुँचा सकता, जब तक अल्लाह का हुक्म और मर्ज़ी न हो, इसलिए उस के सीखने का क्या फ़ायेदा है? यही वजह है कि इस्लाम ने जादू सीखने और करने को कुफ़्र कहा है, हर तरह की भलाई की कामना और नुकसान से बचाव के किए केवल अल्लाह तआला से ही दुआ की जाये क्योंकि वही हर चीज का करने वाला है और मख़लूक़ का हर काम उसी की मर्ज़ी से होता है।

कहो ।[1] और सुनते रहा करो और काफ़िरों के लिए दुखदायी अज़ाब है ।

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿105﴾

१०५. न तो अहले किताब के काफ़िर और न मूर्तिपूजक चाहते हैं कि तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से भलाई उतरे (उन के इस हसद से क्या हुआ?) अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपनी रहमत ख़ास तरीक़े से अता कर दे और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल वाला है ।

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ۗ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿106﴾

१०६. जिस आयत को हम मंसूख़ कर दें या भुला दें उससे अच्छी या उस जैसी और लाते हैं[2] क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह हर चीज़ की क़ुदरत रखता है ।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿107﴾

१०७. क्या तुझे मालूम नहीं कि धरती और आकाशों का मुल्क अल्लाह ही के लिए है । और अल्लाह के सिवाय तुम्हारा कोई संरक्षक (वली) और मददगार नहीं ।

اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۗ وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿108﴾

१०८. क्या तुम अपने रसूल से वैसे सवाल करना चाहते हो जैसे इससे पहले मूसा (ﷺ) से पूछा गया[3] (सुनो!) जो ईमान को कुफ़्र से बदलता है वह सीधी राह से भटक जाता है ।

---

[1] راعنا, का मतलब है, हमारा विचार कीजिये, लेकिन यहूदी अपने हसद की वजह से इस लफ़्ज़ को थोड़ा सा बिगाड़ कर इस्तेमाल करते थे, जिससे उसका मतलब बदल जाता था, वे कहते थे راعينا जिसका मतलब 'हमारे चरवाहे । या راعنا का मतलब है 'मूर्ख' वग़ैरह, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम انظرنا कहा करो ।

[2] نسخ के शाब्दिक अर्थ (लफ़्ज़ी मायने) तो "नक़्ल" करने के हैं, लेकिन धार्मिक परिभाषा में एक हुक्म को मंसूख़ करके दूसरा हुक्म उतारने के हैं, यह बदलाव अल्लाह तआला की तरफ़ से हुआ है, जैसे आदम ﷺ के समय में सगे बहन-भाई में शादी जायज़ थी, बाद में इसे हराम कर दिया गया आदि, इसी तरह क़ुरआन में भी अल्लाह तआला ने कुछ हुक्म मंसूख़ करके उनकी जगह पर नये क़ानून उतारे हैं ।

[3] मुसलमानों (सहाबा) को चेतावनी (तंबीह) दी जा रही है कि तुम यहूदियों की तरह अपने रसूल से अपनी मनमानी ग़ैर ज़रूरी सवाल मत किया करो, इस में कुफ़्र की उम्मीद है ।

१०९. इन अहले किताब के ज़्यादातर लोग सच्चाई ज़ाहिर हो जाने के बावजूद सिर्फ़ हसद और जलन की वजह से तुम्हें भी ईमान से हटा देना चाहते हैं तुम भी माफ़ करो और छोड़ दो यहाँ तक कि अल्लाह अपना फैसला लागू कर दे। बेशक अल्लाह (तआला) हर काम करने की कुदरत रखता है।

وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَٰبِ لَوْ يَرُدُّونَكُم مِّنۢ بَعْدِ إِيمَٰنِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا مِّنْ عِندِ أَنفُسِهِم مِّنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۖ فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِۦٓ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (109)

११०. तुम नमाज़ की अदायगी करो और ज़कात (धर्मदान) देते रहो और जो भलाई तुम अपने लिये आगे भेजोगे सब कुछ अल्लाह के पास पा लोगे, बेशक अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमल को देख रहा है।

وَأَقِيمُوا الصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا الزَّكَوٰةَ ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُم مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِندَ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (110)

१११. और ये कहते हैं कि जन्नत में यहूदी और इसाई के सिवाय कोई न जायेगा, ये सिर्फ़ उन की तमन्नायें हैं, उन से कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो कोई सुबूत तो पेश करो।

وَقَالُوا لَن يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَن كَانَ هُودًا أَوْ نَصَٰرَىٰ ۗ تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ۗ قُلْ هَاتُوا بُرْهَٰنَكُمْ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ (111)

११२. सुनों! जिस ने अपने को अल्लाह के सपुर्द कर दिया, और नेक है उसी के लिये उस के रब के यहाँ अज्र है और न उन पर कोई डर होगा न कोई ग़म।

بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُۥ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُۥٓ أَجْرُهُۥ عِندَ رَبِّهِۦ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (112)

११३. यहूदी कहते हैं इसाई सही रास्ते पर नहीं, और इसाई कहते हैं कि यहूदी सही रास्ते पर नहीं। जबकि ये तौरात पढ़ते हैं, इसी तरह इन ही जैसी बात जाहिल भी कहते हैं,[1] क़यामत के दिन अल्लाह इन के इस इख़्तिलाफ़ का फ़ैसला कर देगा।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصَٰرَىٰ عَلَىٰ شَيْءٍ وَقَالَتِ النَّصَٰرَىٰ لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتَٰبَ ۗ كَذَٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ (113)

[1] अहले किताब के मुक़ाबले में अरब के मूर्तिपूजक पढ़े लिखे नहीं थे, इसलिए उन्हें जाहिल कहा गया, लेकिन वे भी मूर्तिपूजक होने के बावजूद यहूदी और इसाईयों की तरह इस झूठी उम्मीदों में लिप्त (मुब्तिला) थे कि वही सच्चाई पर हैं इसीलिए वे नबी ﷺ को अधर्मी कहते थे।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسَٰجِدَ اللَّهِ أَن يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا ۚ أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَن يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ (114)

११४. और उस से बड़ा ज़ालिम कौन है? जो अल्लाह (तआला) की मस्जिदों में अल्लाह का ज़िक्र करने से रोके, और उनको बर्बाद करने की कोशिश करे,[1] ऐसे लोगों को डरते हुए उस में दाख़िल होना चाहिए, उन के लिए दुनिया में भी ज़िल्लत है और आख़िरत में भी बड़ी-बड़ी सज़ायें हैं।

وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ (115)

११५. और पूरब व पश्चिम का मालिक अल्लाह ही है, तुम जिधर भी मुंह करो उधर ही अल्लाह का मुंह है,[2] अल्लाह (तआला) बहुत ताक़त वाला जानने वाला है।

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۗ سُبْحَانَهُ ۖ بَل لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ كُلٌّ لَّهُ قَانِتُونَ (116)

११६.और ये कहते हैं कि अल्लाह (तआला) की औलाद है (नहीं बल्कि) वह पाक है, धरती और आकाशों की सारी मख़लूक़ पर उसकी हुकूमत है और हर एक उसका फ़रमांबरदार है।

بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ (117)

११७. वह आकाशों और धरती का ईजाद करने वाला है, और वह जिस काम का फ़ैसला करता है कह देता है कि हो जा, वह हो जाता है।

[1] तबाही सिर्फ़ यही नहीं है कि उसे ढा दिया जाये तथा इमारत को नुकसान पंहुचाया जाये, बल्कि उन में अल्लाह की इबादत और ज़िक्र करने से रोकना, धार्मिक नियमों की स्थापना (क़ायम करना) और शिर्क के प्रदर्शन (मज़ाहिर) से पाक करने से मना करना भी ज़ुल्म और अल्लाह के घरों को बरबाद करना है।

[2] हिजरत के बाद जब मुसलमान 'बैतुल मुक़द्दस' की ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ा करते थे, तो मुसलमानों को इसका दुख था, इस मौक़ा पर यह आयत उतरी। कुछ कहते हैं कि यह आयत उस समय उतरी जब 'बैतुल मुक़द्दस' से फिर ख़ाने काअ़बा की ओर मुंह करने का हुक्म हुआ तो यहूदियों ने तरह-तरह की बातें गढ़ी, कुछ के नज़दीक इसके उतरने की वजह सफ़र में सवारी पर नफ़िल नमाज़ों को पढ़ने की इजाज़त हुई कि सवारी का मुंह किधर भी हो, नमाज़ पढ़ सकते हो, कभी कुछ वजह से जमा हो जाते हैं और उन सभी के हुक्म के लिए एक ही आयत उतरती है, ऐसी आयतों के लिए कई कथन (अक़वाल) जमा होते हैं, किसी कथन में एक उतरने की वजह का बयान होता है और किसी में दूसरा। ये आयत भी इसी तरह की है। (अहसनुल तफ़ासीर)

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَأْتِينَا آيَةٌ ۗ كَذَٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۘ تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ ۗ قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿118﴾

११८. और इसी तरह अनपढ़ लोगों ने भी कहा कि ख़ुद अल्लाह (तआला) हम से बातें क्यों नही करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती, इसी तरह ऐसी ही बात उन के पहले लोगों ने भी की थी, उन के और इन के दिल एक जैसे हो गये, हम ने तो यक़ीन करने वालों के लिए निशानियों का बयान कर दिया।

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۖ وَلَا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ ﴿119﴾

११९. हम ने आप को हक़ के साथ ख़ुशख़बरी देने वाला और आगाह कराने वाला बनाकर भेजा है और नरकवासियों के बारे में आप से नही पूछा जायेगा।

وَلَنْ تَرْضَىٰ عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ۗ قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿120﴾

१२०. और आप से यहूदी और इसाई कभी भी ख़ुश न होंगे, जब तक कि आप उन के मज़हब का अनुकरण (पैरवी) न कर लें, (आप) कह दीजिए कि अल्लाह की हिदायत ही हिदायत होती है,[1] और अगर आप ने अपने पास इल्म आ जाने के बावजूद फिर भी उनकी इच्छाओं की पैरवी की तो अल्लाह के पास न तो आप का कोई वली होगा न कोई मददगार।

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَتِهِ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿121﴾

१२१. जिन्हें हमने किताब दी[2] और वे उसे पढ़ने के हक़ के साथ पढ़ते हैं[3] वे इस किताब पर भी ईमान रखते हैं और जो इस पर ईमान नहीं रखते वह ख़ुद अपना घाटा करते हैं।

---

[1] जो अब इस्लाम धर्म की शक्ल में है जिसकी दावत नबी ﷺ दे रहे हैं, न कि बदले हुए रूप में यहूदी और इसाई धर्म।

[2] अहले किताब के बुरे लोगों के बुरे चरित्र और अख़लाक़ का ज़रूरी बयान करने के बाद उन में जो कुछ लोग अच्छे काम करने वाले और सच्चे थे, इस आयत में उनकी सिफ़्तों और उन को ईमानवाले होने की ख़बर दी जा रही है। इन में अब्दुल्लाह बिन सलाम और उन जैसे और इंसान हैं जिनको यहूदियों में से इस्लाम धर्म क़ुबूल करने की ख़ुशनसीबी हासिल हुई।

[3] "वह इस तरह पढ़ते हैं, जिस तरह पढ़ने का हक़ है।" के कई मतलब बयान किये गये हैं। जैसे, १- "ध्यानपूर्वक पढ़ते है।" जन्नत का बयान आता है तो जन्नत की तमन्ना करते हैं तथा जहन्नम का बयान आता है तो उससे बचे रहने की दुआ करते हैं। (२) इस के हलाल को हलाल, हराम को हराम समझते और अल्लाह के कलाम को बदला नहीं करते, जैसे दूसरे यहूदी करते थे। (३) उस में जो कुछ लिखा है लोगों को बताते है, उसकी कोई बात नहीं छिपाते। (४) इसकी वाज़ेह (स्पष्ट) बातों के अनुसार अमल करते है, अस्पष्ट (ग़ैर वाज़ेह) बातों पर ईमान रखते हैं और जो बाते समझ में नहीं आती उन्हें आलिमों से हल करवाते हैं। (५) इसकी एक-एक बात का पालन करते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

१२२. ऐ इस्राईल के पुत्रों! मैंने तुम को जो नेमतें दी हैं उन्हें याद करो और यह कि मैंने तुम्हें सारे जहाँ में फ़ज़ीलत अता कर रखी थी।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَي الْعٰلَمِيْنَ ﴿122﴾

१२३. और उस दिन से डरो जिस दिन कोई इंसान किसी इंसान को कोई फ़ायेदा न पहुँचा सकेगा न किसी इंसान से कोई बदला क़ुबूल किया जायेगा न उसे कोई सिफ़ारिश फ़ायेदा पहुँचा सकेगी न उसकी मदद की जायेगी।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَـيْـــًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا ھُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿123﴾

१२४. और जब इब्राहीम (عليه السلام) की उन के रब ने कई-कई बातों से परीक्षा ली,[1] और उन्होंने सभी को पूरा कर दिखाया तो (अल्लाह ने) फ़रमाया कि मैं तुम्हें लोगों का इमाम बना दूँगा। पूछा- और मेरी औलाद को, जवाब दिया कि मेरा वादा ज़ालिमों से नहीं।

وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَـمَّهُنَّ ۭ قَالَ اِنِّىْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ۭ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ ۭ قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿124﴾

१२५. और हम ने बैतुल्लाह (कअबा) को इंसानों के लिए सवाब और अमन की जगह बनाया, तुम "मुक़ामे इब्राहीम" (इब्राहीम का मुक़ाम- मस्जिद हराम में एक मुक़र्रर जगह का नाम है जो काअबा के दरवाज़े के सामने थोड़ी बायें हटकर है) को "मुसल्ला" (नमाज़ पढ़ने का मुक़ाम) मुक़र्रर कर लो[2], और हम ने इब्राहीम और इस्माईल (عليهم السلام) से वादा लिया कि मेरे घर को तवाफ़ और एतिकाफ़ करने वालों और रुकूउ करने और सज्दा करने वालों के लिए पाक और साफ़ रखो।

وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ۭ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰھٖمَ مُصَلًّى ۭ وَعَهِدْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰھٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِىَ لِلطَّاۗىِٕفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿125﴾

[1] कलिमात से मुराद धार्मिक हुक्म, हज के क़ानून, बेटे की क़ुर्बानी, हिजरत, नमरूद की आग, और वह सभी इम्तेहान हैं जिन से हज़रत इब्राहिम (عليه السلام) गुज़ारे गये, और वह हर इम्तेहान में कामयाब रहे जिसके नतीजे में इंसानों के मुखिया पद से सम्मानित (सरफ़राज़) किये गये। इसलिए मुसलमान ही नहीं, यहूदी इसाई यहाँ तक कि अरब के मूर्तिपूजकों, सब ही में उन के व्यक्तित्व का सम्मान (एहतेराम) है और उनको अगुवा माना और समझा जाता है।

[2] **इब्राहिम का मुक़ाम'** से मतलब वह पत्थर है, जिस पर खड़े होकर हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) काअबा को बनाया करते थे, इस पत्थर पर हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के पैर के निशान हैं। अब इस पत्थर को एक शीशे में महफ़ूज़ कर दिया गया है, जिसे हर हाजी और उमरा करने वाला इंसान बैतुल्लाह की ज़ियारत के वक़्त देख सकता है, इस जगह पर तवाफ़ पूरा करने के बाद दो रकाअत नमाज़ पढ़ना सुन्नत है।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِيمُ رَبِّ ٱجْعَلْ هَٰذَا بَلَدًا ءَامِنًا وَٱرْزُقْ أَهْلَهُۥ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ مَنْ ءَامَنَ مِنْهُم بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ ۖ قَالَ وَمَن كَفَرَ فَأُمَتِّعُهُۥ قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهُۥٓ إِلَىٰ عَذَابِ ٱلنَّارِ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ﴿126﴾

१२६. और जब इब्राहीम ने कहा, हे मेरे रब ! तू इस जगह को शान्तिमय (मामून) नगर बना और यहाँ के रहने वालों को जो अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान रखने वाले हों, फलों की रोज़ी अता कर ![1] अल्लाह ने कहा कि मैं काफ़िरों को भी थोड़ा फ़ायेदा दूँगा, फिर उन्हें आग के अज़ाब की तरफ़ मजबूर कर दूँगा, यह पहुँचने की बुरी जगह है।

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَٰهِيمُ ٱلْقَوَاعِدَ مِنَ ٱلْبَيْتِ وَإِسْمَٰعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿127﴾

१२७. जब इब्राहीम (ﷺ) और इस्माईल (ﷺ) कअ्बा की बुनियाद (और दीवारें) उठाते जाते थे और कहते जाते थे कि ऐ हमारे रब ! तू हम से क़ुबूल कर तू ही सुनने वाला और जानने वाला है।

رَبَّنَا وَٱجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِن ذُرِّيَّتِنَآ أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ﴿128﴾

१२८. हे हमारे रब ! हमें अपना फ़रमाँबरदार बना और हमारी औलाद में से एक समूह को अपना फ़रमाँबरदार बना और हमें अपनी इबादतें सिखा और हमारी तौबा क़ुबूल कर, तू तौबा क़ुबूल करने वाला, रहम करने वाला है।

رَبَّنَا وَٱبْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا۟ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنتَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿129﴾

१२९. हे हमारे रब ! उन में, उन्हीं में से एक रसूल (ईश्दूत) भेज,[2] जो उनके पास तेरी आयतें पढ़े और उन्हें किताब व हिक्मत सिखाये[3] और उन्हें पाक करे, बेशक तू ग़ालिब और हिक्मत वाला है।

---

[1] अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम की ये दुआयें क़ुबूल कीं, यह नगर शान्ति (अमन) कि नगरी भी है, और खेती न होने के बावजूद भी दुनिया के सभी फल और हर तरह के अनाज की अधिकता को देख कर इंसान दंग हो जाता है।

[2] यह हज़रत इब्राहीम और इस्माईल की आख़िरी दुआ है। यह भी अल्लाह तआला ने क़ुबूल किया और हज़रत इस्माईल ﷺ की औलाद में से हज़रत मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ को रसूल बनाया, इसीलिए नबी ﷺ ने फ़रमाया :

((أنا دعوة أبي إبراهيم، وبشارة عيسى ورؤيا أمي التي رأت))

"मैं अपने बाप हज़रत इब्राहीम ﷺ की दुआ, हज़रत ईसा की ख़ुशख़बरी और अपनी माँ का ख़्वाब हूँ।" (मुसनद अहमद ससंदर्भ इब्ने कसीर)

[3] किताब से मतलब क़ुरआन करीम और हिक्मत (विज्ञान) से मतलब हदीस है।

१३०. और इब्राहीम के धर्म (दीन) से वही मुंह मोड़ेगा जो ख़ुद बेवक़ूफ़ हो, हम ने तो उसे दुनिया में भी अपना लिया और आख़िरत में भी वह नेक लोगों में से हैं।

وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ (130)

१३१. जब (भी) उन के रब ने कहा कि आत्म-सर्मपण कर दो तो कहा कि मैंने सारे जहां के रब के लिए आत्मसर्मपण कर दिया।

اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (131)

१३२. इसी की वसीयत इब्राहीम और याक़ूब ने अपनी औलाद को की, कि हमारे बच्चों! अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए इस धर्म को निर्धारित कर दिया है, ख़बरदार! तुम मुसलमान ही मरना।[1]

وَوَصّٰى بِهَآ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِىَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ؕ (132)

१३३. क्या तुम (हज़रत) याक़ूब की मौत के वक़्त हाज़िर थे? जब उन्होंने अपनी औलाद से कहा कि तुम मेरी मौत के बाद किसकी इबादत करोगे, तो सभी ने जवाब दिया था कि आप के रब की और आप के बुज़ुर्ग इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ के माबूद की, जो एक ही है और हम उसी के ताबेदार रहेंगे।

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِىْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ (133)

१३४. यह उम्मत तो गुज़र चुकी, जो उन्होंने किया वो उन के लिए है और जो तुम करोगे वह तुम्हारे लिए है, उन के अमल के बारे में तुम से नहीं पूछा जायेगा।

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (134)

१३५. ये कहते हैं कि यहूदी और इसाई बन जाओ तो हिदायत पाओगे, तुम कहो कि सही रास्ते पर तो इब्राहीम (ﷺ) के पैरोकार हैं, और इब्राहीम (ﷺ) सिर्फ़ अल्लाह के फ़रमांबर्दार थे वे मूर्तिपूजक नहीं थे।[2]

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (135)

---

[1] हज़रत इब्राहीम (ﷺ) और हज़रत याक़ूब (ﷺ) ने الدين (सत्यधर्म) की वसीयत अपनी औलाद को किया जो यहूदी धर्म नही इस्लाम धर्म ही है। जैसा कि यहां भी इसका बयान मौजूद है और क़ुरआन करीम में कई जगहों पर भी इसका तफ़सीली बयान है।

[2] यहूदी, मुसलमानों को यहूदी धर्म की और इसाई, इसाई धर्म की दावत देते और कहते कि हिदायत का नूर इसी में है। अल्लाह तआला ने कहा कि उन से कहो कि हिदायत इब्राहीम के धर्म की अनुकरण (पैरवी) में है, जो हनीफ था (यानी सिर्फ़ एक अल्लाह ही का पैरोकार और उसकी इबादत करने वाला) वह मूर्तिपूजक नहीं था।

१३६. (ऐ मुसलमानों!) तुम सब कहो हम अल्लाह पर ईमान लाये और उस पर भी जो हमारी तरफ़ उतारी गई और जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़, याकूब और उनकी औलाद पर उतारी गई और जो कुछ अल्लाह की तरफ़ से मूसा, ईसा और दूसरे नबियों को दिये गए, हम उन में से किसी के बीच फ़र्क नहीं करते, हम अल्लाह के ताबेदार हैं ।[1]

قُولُوٓا۟ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَآ أُنزِلَ إِلَىٰٓ إِبْرَٰهِـۧمَ وَإِسْمَٰعِيلَ وَإِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ وَٱلْأَسْبَاطِ وَمَآ أُوتِىَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَآ أُوتِىَ ٱلنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُۥ مُسْلِمُونَ ﴿136﴾

१३७. अगर वह तुम जैसा ईमान लाए तो हिदायत पाएंगे, और अगर मुंह मोड़े तो ख़िलाफ़ में हैं, अल्लाह (तआला) उन से निकट भविष्य (मुस्तक़बिल) में तुम्हारी मदद करेगा। वह अच्छी तरह से सुनने और जानने वाला है।

فَإِنْ ءَامَنُوا۟ بِمِثْلِ مَآ ءَامَنتُم بِهِۦ فَقَدِ ٱهْتَدَوا۟ ۖ وَّإِن تَوَلَّوْا۟ فَإِنَّمَا هُمْ فِى شِقَاقٍ ۖ فَسَيَكْفِيكَهُمُ ٱللَّهُ ۚ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ﴿137﴾

१३८. अल्लाह का रंग अपनाओ और अल्लाह (तआला) से अच्छा रंग किसका होगा?[2] हम तो उसी की इबादत करने वाले हैं।

صِبْغَةَ ٱللَّهِ ۖ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ ٱللَّهِ صِبْغَةً ۖ وَنَحْنُ لَهُۥ عَٰبِدُونَ ﴿138﴾

---

[1] यानी ईमान यह है कि सभी नबियों को अल्लाह तआला की ओर से जो कुछ मिला या उन पर उतरा, सभी पर ईमान लाया जाए, किसी भी किताब या रसूल का इंकार न किया जाए, किसी एक किताब या नबी को मानना, किसी को न मानना, यह नबियों में फ़र्क ज़ाहिर करता है जिसे इस्लाम ने ठीक नही कहा है, लेकिन अब अमल केवल क़ुरआन करीम के क़ानूनों और आदेशानुसार होंगे, पहले किताबों में लिखी हुई के अनुसार नहीं, क्योंकि पहले तो वे अपने असल रूप (शक्ल) में नहीं है, परिवर्तित (बदले हुए) हैं, दूसरे क़ुरआन ने उन सभी के हुक्मों को मंसूख़ कर दिया है।

[2] इसाईयों ने एक पीले रंग का पानी निर्धारित (मुक़र्रर) कर रखा है, जो हर इसाई लड़के को और हर उस इंसान को भी दिया जाता है जिसका मक़सद इसाई धर्म क़ुबूल करना होता है। इस रीति का नाम उन के यहाँ "बैप्टिज़्म" है। यह उन के यहाँ बहुत ज़रूरी है इस के बिना वे किसी के पाक होने की कल्पना (तसव्वुर) नही करते, अल्लाह तआला ने उनका खण्डन (तरदीद) किया है और कहा है कि सच्चा रंग तो अल्लाह का रंग है, उस से बड़ा कोई रंग नहीं। अल्लाह के रंग का मतलब वह प्राकृतिक धर्म है, या इस्लाम धर्म है, जिसकी तरफ़ हर नबी ने अपने-अपने ज़माने में अपनी-अपनी उम्मत को दावत दिया या 'एकेश्वरवाद' (तौहीद) की दावत।

قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِى اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ﴿139﴾

१३९. (आप) कह दीजिए क्या तुम हम से अल्लाह के बारे में झगड़ते हो, जो हमारा और तुम्हारा रब है, हमारे लिए हमारे अमल हैं, तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल, हम तो उसी के लिए मुख़्लिस हैं।

اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ۗ قُلْ ءَاَنْتُمْ اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ۗ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿140﴾

१४०. क्या तुम कहते हो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़ और याक़ूब और उनकी औलाद यहूदी या इसाई थी? कह दो क्या तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह (तआला)? अल्लाह के पास सुबूत छुपाने वालों से ज़्यादा ज़ालिम और कौन है? और अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमल से ग़ाफ़िल नहीं।

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْئَلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿141﴾

१४१. यह समुदाय (उम्मत) है जो गुज़र चुका, जो उन्होंने किया उन के लिए है और जो तुम ने किया तुम्हारे लिये, तुम से उन के अमल के बारे में सवाल नहीं किया जाएगा।[1]

---

[1] इस आयत में फिर फ़ायेदा और अमल की विशेषता (फ़ज़ीलत) का बयान करके बुज़ुर्गों और महात्माओं से रिश्ता या उन पर भरोसा को बेकार बताया गया है। क्योंकि :

(مَنْ بَطَّأَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يُسْرِعْ بِهِ نَسَبُهُ)

"जिसको उसका कर्म (अमल) पीछे छोड़ गया, उसका वंश उसे आगे नही बढ़ाएगा।" (सहीह मुस्लिम)

मतलब है कि बुज़ुर्गों के अच्छे काम से तुम्हें कोई फ़ायेदा और उन के गुनाहों पर तुम से कोई पूछताछ न होगी, बल्कि उन के अमल के बारे में तुम से या तुम्हारे अमल के बारे में उन से नही पूछा जाएगा।

﴿وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَى﴾

"कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा।" (सूर: फ़ातिर-१८)

﴿وَأَنْ لَيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَى﴾

"इंसान के लिए वही कुछ है जिस के लिए उस ने कोशिश की।" (सूर: अल-नजम-३९)